31

सरकारी योजना और गरीबी रेखा से नीचे के लोग

- प्रा. ठाकूर संजयसिंग प्रतापसिंग
स्व. नितीन महाविद्यालय,
पाथरी जि. परभणी

भारत विश्व में सबसे तेज गति से वृध्दि दरप्राप्त करनेवाली अर्थव्यवस्थाओं में शामिल देश की गणना में आता है। यह माना जाता है की , आनेवाले दशकों मे भारत एक आर्थिक महाशक्तिशाली संपन्न देश होगा। पर भारत में गरीबी रेखा में रहनेवलों की तादाद काफी बडी है। यहा का आम आदमी जो कम आमदनी होने पर भी अपनी जरूरत की, भौतिक आवश्यकताओं की पुर्ति कर नही पा रहा है। गरीबी रेखा मे रहनेवाले के संदर्भ में मोहन गुरू स्वामी और रोनाल्ड जोजेफ ने लिखा है की, गरीबी एक आर्थिक परिस्थिति है। भूख एक शारिरीक परिस्थीति है। जब की भूक की कैलरियों के रूप में परिभाषा स्थिर हो सक्ती है, गरीबी की परिभाषा सामान्य समृध्दि के वर्तमान स्तर के संदर्भ में सापेक्ष है। वर्तमान औपचारिक गरीबी रेखा केवल कैलरी उपभोग पर ही आधारित है और इसमें और कुछ भी शामिल नही है। इसीलिए यह व्यक्ति की शारिरीक भूख की दृष्टि के सिवा और कुछ भी नही है।[1]

गरीबी एक बहुआयामी समस्या है, ऐसे कुछ क्षेत्र है, जिनमे इनकी संख्या अधिकतर मानी जाती है जेसे , शहरों में जुग्गी झोपडी में रहनेवाला व्यक्ति , गाँव में रहनेवाला वर्षा पर आधारित कृषि क्षेत्र से संबंधित किसान , गाँव और शहरों का श्रमिक वर्ग इनकी तादाद बडी मानी जाती है। 1973 के पश्चात गरीबों का प्रतिशत और कुल संख्या निम्ननुसार है :-

वर्ष	गरीबो का प्रतिशत (%)	गरीबो कीं संख्या	औसत वार्षिक कमी का दर (%)
1973-74	54.9	32.1	0.59
1977-78	51.3	32.9	0.31
1983	44.5	32.3	0.31
1987-88	38.9	30.7	1.25
1993-94	36.0	32.0	0.7
1999-00	26.1	26.0	3.4
2004	23.6	25.0	0.82

भारत में गरीबी रेखा का कम करने के लिए सरकार की योजनाएँ :-

भारत में गरीबी काफी ऊपर है। भारत के योजना आयोग नें हमेशा देश के कुल आबादी के कुछ प्रतिशत गरीबी को मानते हुए अपनी योजनाए बनाई है। भारत देश में गरीबी रेखा की बात करे तो लगभग 45 करोड से ज्यादा लोग गरीबी के श्रेणी में आते है। इसको देखते हुए भारत सरकार द्वारा कुछ योजनाओं को शुरू किया गया है।

1) **भुमिहीन रोजगार गॅरंटी कार्यक्रम :-** गरीबी रेखा के नीचे के लोगों को इस योजना के माध्यम से रोजगार प्रदान किया जाता है। महाराष्ट्र राज्य में यह योजना सबसे अधिक परिचित है। इसे 'रोजगार हमी योजना' के नाम से जाना जाता है। इस योजना कें माध्यम से गाँव के बेकार लोंगो को रोजगार प्रदान किया जाता है।
2) **राष्ट्रीय ग्रामीण विकास :-** इस योजना कें माध्यम से गाँव मे रहनेवाले लोंगो को प्रारंभ में काम के बदले अनाज दिया जाता था। यह 1 एप्रिल , 1977 से देशभर में प्रभावी रुप से चलाई गयी , जिसमे सडकों की मरम्मत करना , स्कुल का निर्माण करना, गांव मे साफ-सफाई अभियान चलाना आदि।

3) **स्व-रोजगार के लिए ग्रामीण युवाओं को प्रशिक्षण :-** भारत की प्रथम पंचवर्षिय योजना (1951-1961) में 5.3 मिलीयन बेकार लोगों की संख्या थी ।[3] जिसे देखते हूए 15 ऑगस्ट , 1979 से भारत में इस योजना का प्रारंभ हूआ । इसका मुल उद्देश गरीबी रेखा में रहनेवाले परिवार के 18 से लेकर 35 की उम्र तक के युवकों को प्रशिक्षण के लिए चुना जाता और उन्हे कृषि , उद्योग और नौकरी के क्षेत्र में रोजगार प्राप्त हो , इसके साथ-साथ उन्हे छात्रवृत्ति भी प्राप्त होती है।
4) **न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम :-** सन 1974-75 में पांचवे पंचवार्षिक योजना के अभिन्न भाग के रुप में इसे शूरू किया गया। इस योजना के तहत लोगों मे प्राथमिक और प्रौढ शिक्षा अभियान चलाना, सडकों का निर्माण करना, मकानों का निर्माण आदिपर लक्ष केंद्रीत किया गया।
5) **जवाहर रोजगार योजना :-** जवाहर रोजगार योजना एप्रिल 1989 मे घोषित की गयी , जिसमे गरीबी रेखा में रहनेवाले लोगों को साल में से 50 से लेकर 100 दिन तक रोजगार प्रदान किया जाता है। इस योजना में महिलाओं को 30% जगह आरक्षित की गयी है।
6) **एकीकृत ग्रामीण विकास योजना :-** केंद्र सरकार द्वारा मार्च 1976 में इसे देश के बीस जिल्हों में एकीकृत ग्रामीण विकास योजना का प्रारंभ हूआ। आगे चलकर 1982 में देश के पंचायत स्तर पर इसे लागू किया गया । इस योजना का सबसे बडा उद्देश गरीबी रेखा को दुर करने का ही रहा है।
7) **गरीबी और बेरोजगारी हटाओ कार्यक्रम :-** इंदिरा गांधी ने मार्च 1971 मे 'गरीबी हटाओ' का नारा दिया । काँग्रेस के राष्ट्रीय संमेलन में (एप्रिल 1988) बेकारी हटाओ , गरीबी निर्मूलन का कार्यक्रम लिया गया । बाद में 1975 में 20 सुत्री कार्यक्रम को सारे भारत में शुरू किया गया ।

उपसंहार :-

भारत में गरीबी रेखा में जीवन जीने वालों की तादाद लंबी है। सन 1951 से सरकार पंचवर्षीय योजना के माध्यम से उसे दूर करने का प्रयास कर रही है। लेकीन गरीबी रेखा में जीवन निर्वाह करने वाले लोगों की अपनी आय बनाने के लिए कृषि की अपेक्षा गैर फार्म क्रियाओं को बढावा देना होगा । उसी प्रकार गरीबी रेखा में रहनेवालें लोगों मे शिक्षा के प्रति जागृत करना होगा , नई-नई सुचना तंत्र का प्रयोग करना होगा, तब बेरोजगारी कम होगी और देश का विकास होगा । भारत एक संपन्न देश के रुप में विकसित राष्ट्र हेागा , जिसपर हर भारतीयों को गर्व होगा।

संदर्भ-सुची :-

1) दत्त एवं सुंदरम् भारतीय अर्थव्यवस्था- गौरव दत्त , अश्विनी महाजन , पृ. - 397 एस. चंद्र अँड कंपनी प्रा. लि. नई दिल्ली - 110055
2) विकास , गरीबी और समता - रुद्रदत्त पृ. 104 , रीगल प्रकाशन , नई दिल्ली -110027
3) भारतीय अर्थ व्यवस्था - मीरा रंजनलाल पृ. 25 , रीगल प्रकाशन , नई दिल्ली -110027